स्तालिन की संकलित रचना जिल्द 18 से ...

मास्को में चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधिमंडल के साथ बातचीत से कुछ अंश (11 जुलाई 1949)

यह दस्तावेज 1956 के बाद चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी (संक्षेप में सी पी सी) के नेताओं के द्वारा लगाए आरोप कि सोवियत रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी (संक्षेप में सी.पी.एस.यू. (बी.)) और स्तालिन का चीनी कम्यूनिस्टों के प्रति दबंग व्यवहार था, के संदर्भ में काफी दिलचस्प है। यह इस आरोप को ग़लत साबित करता है। इस तरह की निन्दा 1930 के दशक में त्रोत्सकी-वादियों और 1940 और 1950 के दशक में टीटो-वादियों की आलोचनाओं जैसी ही है। 1970 के अपने सोरीन बोस के साथ हुई चर्चा में, ज़ाऊ ऐन लाई ने कहा कि माओ ने कम्यूनिस्टों और मज़दूरों की पार्टियों की 1960 में मास्को वाली बैठक के दौरान ख्रुश्चोव और स्तालिन के संदर्भ में 'पितृसत्तात्मक पार्टी' की धारणा का विरोध किया था। (ज़ाउ एन लाई: 'सोरिन बोस के साथ चर्चा', तारिमेला नागी रेड्डी मेमोरियल ट्रस्ट, विजयवाडा, एनडीपी 6.) मगर यह लेख दिखाता है कि उनकी आलोचना गलत है। सच्चाई तो यह है की जुलाई 1949 में चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने खुद ही तय किया था कि वह सी.पी.एस.यू. (बी.) के निर्णयों के आगे 'समर्पण' करेगा। स्तालिन ने यह कहते हुए कि दो सत्तासीन कम्यूनिस्ट पार्टियों के बीच में ऐसा संबंध सैद्धांतिक रूप से स्वीकार्य नहीं है, इस निर्णय का कड़ा विरोध किया था। स्तालिन की (रूसी) संकलित रचनाओं के जिल्द 18 के संपादक ने अपनी संपादकीय टीप में लिखा है कि स्तालिन ने 1930 के बाद से माओ और चीनी पार्टी ने जो माक्सावाद का चीनीकरण की धारणा प्रस्तुत किया था, उसका स्तालिन ने मैत्रीपूर्ण आलोचना किया था।

विजय सिंह

जे वि स्तालिनः चीनी प्रतिनिधि मंडल यह घोषणा करता है के सी पी सी, सी पी एस यू के निर्णयों के आगे को समर्पण करती है। हमें यह अजीब लगता है। एक राज्य की पार्टी दूसरे राज्य की पार्टी के आगे समर्पण करे यह कभी नहीं हुआ है और स्वीकार्य नहीं है। दोनों पार्टियों को अपने लोगों के प्रति जवाबदेय होते हुए एक दूसरे से कुछ सवालों पर सलाह करना होगा, एक दूसरे की सहायता करना होगा और मुश्किलों में साथ आना होगा। आप के साथ आज की यह पोलिट्ब्यूरो की बैठक हमारी पार्टियों के बीच सहयोग का एक रूप है। इसे ऐसा ही होना चाहिए।

आपके द्वारा दिया गया इस सम्मान के लिए हम आभारी हैं मगर कुछ बातों से हम सहमत नहीं और हम उन्हें बताना चाहते हैं। इसे एक दोस्त की सलाह समझिए। यह

केवल कोरे शब्द नहीं हैं मगर व्यवहार में भी होगा। हम आपको सलाह दे सकते हैं पर हम आदेश नहीं दे सकते क्योंकि हमारे पास चीन के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं है, वहां की स्थिति की बारीकियों के बारे में समझ में हम आपसे तुलना नहीं कर सकते, लेकिन सबसे बढ़कर हम आदेश इसलिए नहीं दे सकते क्योंकि चीन के मामले पूरी तरह से आपके द्वारा ही सुलझाया जाना है। हम उन्हें आपके लिए हल नहीं कर सकते।

आपको अपने हैसियत के महत्व को समझना जरूरी है। आपने जो लक्ष्य अपने लिए चुना है उसका अभूतपूर्व ऐतिहासिक महत्व है। यह केवल कोई तारीफ नहीं है मगर यह रेखांकित करने के लिए कि आपकी जिम्मेदारी कितना महान है और आपके मिशन (लक्ष्य) का ऐतिहासिक महत्व कितना ज्यादा है।

हम दोनों की पार्टियों का आपस में चर्चा करना अनिवार्य है पर हमारे विचारों को कभी भी आदेश नहीं समझा जाना चाहिए। दूसरे देशों की कम्यूनिस्ट पार्टियां हमारे सुझाव अस्वीकार कर सकती हैं। हम भी दूसरी कम्यूनिस्ट पार्टियों के सुझाव अस्वीकार कर सकते हैं।

आई.वी. कोवालेव के द्वारा दर्ज

संदर्भ- Rakhmanin O.B. Stalin and Mao // Dosier 2000. No. 3. C. 10

संकलित रचना संपादकों की ओर से टीपः

चीनी कम्यूनिस्टों के संपूर्ण समर्पण से स्तालिन आश्चर्यचकित थे, मगर यह रुख माओ त्से तुंग के आदेश पर था। और यह 4 जुलाई 1949 की रिपोर्ट में मौजूद है, जिसे आल यूनियन कम्युनिस्ट पार्टी (बी) (संक्षेप में एयूसीपी (बी)) के केन्द्रीय समिति के प्रतिनिधिमंडल को चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी (संक्षेप में सीपीसी) के केन्द्रीय समिति के द्वारा सौंपा गया था। "*ए.यू.सी.पी. (बी.) और सी.पी.सी के बीच संबंध के प्रश्न पर*"- इस शीर्षक वाले दस्तावेज़ में कहा गया है कि, कामरेड माओ त्से तुंग और सीपीसी का मानना है–

"एयूसीपी (बी) अंतरराष्ट्रीय कम्यूनिस्ट आंदोलन का प्राथमिक मुख्यालय है और सी पी सी सिर्फ एक दिशा (सीमित क्षेत्र) का मुख्यालय है। एक हिस्से के हितों को अंतर्राष्ट्रीय हितों के अधीन होना चाहिए, और इसलिए सीपीसी, एयूसीपी (बी) के निर्णयों को बेझिझक स्वीकार करेगा, भले ही कॉमिन्टर्न अब मौजूद नहीं है और सीपीसी यूरोपीय कम्युनिस्ट पार्टियों के सूचना ब्यूरो का हिस्सा नहीं है। (स्तालिन रिपोर्ट पढ़ते हुए इस जगह लिखते हैं– 'नहीं!' - संपादक) अगर किसी प्रश्न पर हमारे विचार अलग है तो सीपीसी अपने विचार समझाने के बाद एयूसीपीसी(बी) के

निर्णयों का कडाई से पालन करेगी। (स्तालिन – 'नहीं!' - संपादक) हमें लगता है हमारी दोनों पार्टियों को जहां तक संभव हो नजदीक संबंध बनानी चाहिए, एक दूसरे को उचित स्तर के राजनैतिक प्रतिनिधियों को भेजकर एक दूसरे के लिए महत्वपूर्ण सवालों को को सुलझाना चाहिए और इस प्रकार दोनों पार्टियों के बीच आपसी समझ विकसित करना चाहिए। (स्तालिन – 'हां!' - संपादक)

"हम चाहते हैं कि सीसी ए-यूसीपी (बी) और कॉमरेड स्तालिन हमें बिना किसी झिझक के अपने निर्देश दें और सीपीसी के काम और नीतियों की आलोचना करें"

(ए एम लेडोवस्की, 'यूएसएसआर और स्तालिन चीन के इतिहास में' पृ. 102-103 (रूसी में)

उस बातचीत में, सीसी एयूसीपी(बी) के पोलिट्ब्यूरो की बैठक के बारे में उल्लेख है जिसमें लियू शाउ ची के नेतृत्व वाली सीसी सीपीसी के प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया और चीन की सैन्य, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति पर रिपोर्ट पेश किया।

1947 की शुरुआत से लेकर 1949 के अंत तक कई बार माओ त्से तुंग के रूस जाने की योजना बनाई गईं पर टाल दी गईं। (देखें: ए.या. ओरलोव के नाम टेलीग्राम 15 जून और 1 जुलाई 1947, 14 जुलाई 1948, माओ त्से तुंग से टेलीग्राम 29 अप्रैल और 10 मई 1948) माओ और स्तालिन के बीच एक गुप्त रेडियो संचार के द्वारा लगातार बातचीत चलती रही। ना तो विदेश मंत्रालय और ना ही चीन में सोवियत दूतावास को इस बारे में जानकारी थी। स्तालिन ने इन रिश्तों में गोपनीयता बनाए रखा, और अंततः वह माओ त्से तुंग, एक क्रांतिकारी बागी सरदार से नहीं बल्कि विजयी चीनी क्रांति के नेता और नव गठित पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के चेयरमैन से मिला। माओ त्से तुंग की 16 दिसंबर से 17 फरवरी 1950 के बीच सोवियत संघ यात्रा के दौरान हुई बातचीत लैडॉव्स्की कि ऊपर बताई किताब में दर्ज है (पृ 119-140)। माओ त्से तुंग से इस बतचीत के दौरान स्तालिन के चिन्तन के सैद्धांतिक पक्ष काफी दिलचस्प है, जैसे वी एम ज़ुखाई के सामग्री के आधार पर वी.वी. वखानी की किताब 'द पर्सनल सीक्रेट सर्विस ऑफ जे वी स्टालिन' में दर्ज है। (मास्को, 2004, पृ 414-416, रूसी में):

"आप एक चीनी समाजवाद की बात करते हैं। परंतु ऐसा तो कुछ होता नहीं है। न कोई रूसी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, इटालियन समाजवाद है न ही चीनी समाजवाद। केवल एक मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट समाजवाद होता है। यह बात अलग है कि समाजवाद के निर्माण में खास देश की विशेष परिस्थितियों का ख्याल रखना पड़ता है। समाजवाद एक विज्ञान है और सारे विज्ञान की तरह इसके भी कुछ सामान्य नियम है जिन्हें अनदेखा करने से समाजवाद का निर्माण असफल होगा।

समाजवाद बनाने के ये सामान्य नियम क्या हैं?

1. सबसे जरूरी है सर्वहारा वर्ग की तानाशाही, मजदूरों और किसानों का राज्य, और इतिहास के सबसे क्रांतिकारी वर्ग, मजदूरों के नेतृत्व में इन दो वर्गों का गठबंधन। केवल मजदूर वर्ग ही है जो समाजवाद का निर्माण कर सकता है और शोषकों न छोटे पूंजीपतियों के विरोध को दबा सकता है।
2. उत्पादन के मुख्य औजार और साधन की सामाजीकृत संपत्ति। सारी बड़ी फैक्ट्रियों का राष्ट्रीयकरण और राज्य द्वारा उनका प्रबंधन।
3. सारे पूंजीवादी बैंकों का राष्ट्रीयकरण, और उन सबको मिलकर एक राजकीय बैंक बनाना, जिसका कामकाज राज्य के द्वारा कड़ाई से विनियमित हो।
4. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक ही केंद्र से वैज्ञानिक और नियोजित संचालन होना। समाजवाद निर्माण में इस सिद्धांत का कडाई से पालन– प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुरूप मेहनत करे, और सबको उनके काम के अनुरूप (उत्पादन का हिस्सा) मिले- भौतिक संसाधन को हर व्यक्ति के काम की मात्रा और गुणवत्ता के हिसाब से बांटना।
5. मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट विचारधारा का वैधानिक वर्चस्व।
6. क्रांति की उपलब्धियों को बचाने वाली सैन्य शक्ति का निर्माण। हमेशा याद रखें कि कोई भी क्रांति तभी सार्थक होगी जब वह अपने आप को बचा पाएगी।
7. क्रांति के विरोधियों (प्रतिक्रांतिकारियों) और विदेशी एजेंटों का कड़ाई से दमन दमन।

यह है संक्षेप में वैज्ञानिक समाजवाद के कुछ प्रमुख नियम जिनके अनुरूप हमें काम करना है। अगर आप इन्हें समझते हैं तो चीन में समाजवाद बनाना ठीक ठाक होगा। यदि नहीं तो आप विश्व के साम्यवादी आंदोलन हो हानि पहुँचाएंगे। जहां तक कि मैं जानता हूं सीपीसी में सर्वहारा वर्ग का परत बहुत हल्का है और राष्ट्रवादी भावनाएं बहुत प्रबल हैं, अगर आप मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट वर्ग नीतियों के मार्ग पर चलते हुए पूंजीवादी राष्ट्रवाद से संघर्ष नहीं करेंगे तो राष्ट्रवादी आप को खत्म कर देंगे। तब चीन में समाजवादी निर्माण खतम हो जाएगा और वह अमेरिकियों के हाथ का एक खतरनाक खिलौना बन सकता है। समाजवाद बनाने के लिए मैं सुझाव देता हूं कि आप लेनिन की किताब 'द इमीडिएट टास्कस् ऑफ सोवियत पावर' का भरपूर उपयोग करें। वह आप की विजय सुनिश्चित करेगा।

(I. Stalin, Sochinenia, Tom 18, Informatsionno-izdatelskii tsentr ‘Soyuz’, Tver, 2006, pp. 531- 533.)